विद्वन्मनोरञ्जनीटीकासमन्वितः

श्रीसदानन्दप्रणीतः

वेदान्तसारः

हिन्दीव्याख्यासहितः

व्याख्याकारः

आचार्य बदरीनाथशुक्लः

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता,

बंगलूरू, वाराणसी, पटना

वेदान्तसारविषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
मङ्गलाचरण	१
गुरुनमस्कार	११
वेदान्तस्वरूपनिरूपण	१९
अधिकारिनिरूपण	२२
कर्म, उसके भेद एवं उपासनानिरूपण	३०
कर्म एवं उपासना का प्रयोजननिरूपण	५४
कर्म और उपासना के अवान्तर फलों का निरूपण	५६
ब्रह्मजिज्ञासा के चार साधनों का निरूपण	६०
साधन-चतुष्टय-सम्पन्न-प्रमाता के अधिकारित्व में श्रुति-प्रामाण्य-प्रदर्शन	६९
विषयनिरूपण	७०
सम्बन्धनिरूपण	७४
प्रयोजननिरूपण	७६
साधनचतुष्टयसम्पन्नजिज्ञासु का गुरुशरणगमनसामीप्य में श्रुतिप्रमाणनिरूपण	८२
अध्यारोप तथा अज्ञान का निरूपण	८६
समष्टि और व्यष्टि का निरूपण तथा अज्ञान का एकत्व एवं अनेकत्व समर्थन	१०४
समष्टि अज्ञानोपहित ईश्वर आदि का निरूपण	१०९
ईश्वर की उपाधि समष्टि के आनन्दमयकोशादिरूप का वर्णन	११०
प्राज्ञ की उपाधि व्यष्टि का अनेकत्व, मलिनसत्त्वप्रधानत्व,	१११-११२
प्राज्ञसंज्ञकत्व, आनन्दमयकोशत्व, सुषुप्तित्व तथा स्थूलसूक्ष्मशरीर-लयस्थानत्व निरूपण	११३
ईश्वर और प्राज्ञ के अभेद का वर्णन	११५-११६
अनुपहित चैतन्य के स्वरूप का वर्णन	
अज्ञान की आवरण और विक्षेपशक्ति का निरूपण	११८
अज्ञानशक्तिसम्पन्नचैतन्य का कर्तृत्व तथा भोक्तृत्ववर्णन	१२२
उपहित चैतन्य में प्रपञ्च का उपादान एवं निमित्त कारणता का वर्णन	१२४
सृष्टिनिरूपण	१२६
सूक्ष्मशरीरनिरूपण	१३६
बुद्धि तथा मन का निरूपण, चित्त और अहङ्कार का अन्तर्भाव एवं इनकी उत्पत्ति का वर्णन	१३९

विज्ञानमयकोश जीव तथा मनोमयकोश का निरूपण १४१
कर्मेन्द्रियों की सृष्टि १४३
वायु के भेद तथा प्राणादि के स्वरूप का निरूपण १४५
मतान्तर से वायु के भेद का निरूपण १४९
प्राणादि के उपादानकारण, प्राणमयकोश, विज्ञानमयकोश, का कर्तृरूपत्व १५१
मनोमयकोश का इच्छा शक्तिमत्त्व, कार्यरूपत्व तथा सूक्ष्मशरीररूप में वर्णन १५४
मिलितकोशों का समष्टि और व्यष्टि भेद से सूक्ष्मशरीर का समष्टि,
एकत्व एवं अनेकत्व तथा समष्टि का सूत्रात्मा, हिरण्यगर्भ और प्राण के
रूप में वर्णन
सूक्ष्मशरीरव्यष्टि उपहितचैतन्य का तैजस तथा विज्ञान कोशादिरूप में वर्णन १५७
तैजस और सूत्रात्मा का भोगनिरूपण १५८
पञ्चीकरणप्रक्रियानिरूपण १६०
त्रिवृत्करण प्रक्रिया का पञ्चीकरण के उपलक्षणरूप में वर्णन १६२
पञ्चीकृतभूत से प्रपञ्च की उत्पत्ति का निरूपण १६७
समष्टि व्यष्टि भेद से वैश्वानर एवं विराट् के स्वरूप का वर्णन १७०
व्यष्टि उपहित चैतन्य विश्व का निरूपण १७१
वैश्वानर एवं विश्व का भोगविशेषनिरूपण १७३
स्थूल प्रपञ्च की उत्पत्ति का वर्णन १७८
स्थूलसूक्ष्मकारणप्रपञ्चों की समष्टि महाप्रपञ्च का निरूपण १७९
"सर्वं खल्विदं ब्रह्म" श्रुति के वाच्य और लक्ष्य १८०
अर्थं का विवेचन
जीवात्मा के विषय में मतभेदों का वर्णन १८२–२०१
चार्वाक मत से शरीरात्मवाद स्वरूप वर्णन १८०
चार्वाक मत में इन्द्रियात्मावाद वर्णन १८७
प्राणात्मवाद निरूपण १९०
मन आत्मवाद निरूपण १९२
बौद्धमत से विज्ञानात्मवाद निरूपण १९४
प्राभाकर और तार्किक मत से अज्ञानात्मवादनिरूपण १९५
भाट्टमत से अज्ञानोपहितचैतन्यात्मवादनिरूपण १९८
बौद्धमत से शून्यात्मवाद निरूपण १९९
पूर्वोक्तमतों में दोष प्रदर्शन एवं २००–२०१
वेदान्त दृष्टि से आत्मस्वरूप
निरूपण
अपवादस्वरूपनिरूपण,
विकार और विवर्त का स्वरूप निरूपण २०६

अध्यारोप और अपवाद के द्वारा 'तत्' और त्वं
पदार्थों का विश्लेषण ... २०८
"अहं ब्रह्मास्मि" इस वाक्य के अर्थ का विश्लेषण ... २२६
वृत्तिव्याप्यत्व और फलव्याप्यत्व रूप से श्रुतिद्वय का समन्वय निरूपण ... २३३
श्रवण मनन निदिध्यासानादि एवं उपक्रम आदि तात्पर्य निर्णायक
लिङ्गों का विश्लेषण ... २३६
मनन और निदिध्यासन का विश्लेषण ... २४३
सविकल्पक समाधि के स्वरूप का निरूपण ... २४४
निर्विकल्पक समाधि का वर्णन। ... २४८
निर्विकल्पक समाधि के अङ्गों का वर्णन। ... २५१
निर्विकल्पक समाधि के विघ्नों का वर्णन। ... २६०
निर्विकल्पक समाधि के स्वरूप का निरूपण। ... २६३
जीवन्मुक्त के स्वरूप का निरूपण ... २६५
तत्त्व साक्षात्कारान्तर मुक्ति के प्रमाण का निरूपण ... २६७
इन्द्रजाल क्रिया के ज्ञाता से जीवन्मुक्ति की उपमा के आधार पर ... २६७
मिथ्या समझ कर जीवन-यापन का विश्लेषण
जीवन्मुक्त के व्युत्थान कालिक क्रियाओं का वर्णन

अनुवाद के विशिष्ट विषयों की अनुक्रमणिका

मङ्गलाचरण के पदों का विश्लेषण—
आत्मानम्, आश्रये, अभीष्टसिद्धये, ... २–१०
सच्चिदानन्दम्, अवाङ्मनसगोचरम्,
अगोचर शब्द की विभिन्न व्याख्या
गुरु की आराधना का विद्याप्राप्त्यङ्गत्व निरूपण, ... १२–१३
'गुरूनाराध्य' का विश्लेषण, गुरु शब्दार्थ विश्लेषण
वेदशब्दार्थविश्लेषण, वेद प्रामाण्य विश्लेषण में ... १३–१९
विभिन्न दार्शनिक मत, वेद विभाग, वेदान्त शब्दार्थ
वेदान्तसार का अर्थ, 'यथामति का विश्लेषण
'वक्ष्ये' का विश्लेषण, 'अतीताद्वैत भावत:'
इस पाठ का अर्थ विश्लेषण।
वेदान्त शब्द का अर्थ, शारीरकशब्दार्थ, प्रकरण की ... २०–२९
परिभाषा, ब्रह्म की उपनिषद् मात्र से वेद्यता का प्रतिपादन,
'विधिवत् वेदाध्ययन' में भाट्ट और प्रभाकर मत,
ज्योतिष्टोम, त्रिवृत्सोम, पञ्चदशस्तोम, सप्तदशस्तोम, एकविंशस्तोम, ... ३१–५३

ज्योतिष्टोम की संस्थायें, स्वर्ग, निषिद्ध, निषेध के प्रस्थानत्रय,
प्रभाकर दृष्टि और प्रस्थान, नैयायिक और प्रस्थान, नित्यकर्म,
अभाव की कारणता का विचार, प्रतिबन्धकाभाव की कारणता के विरुद्ध
युक्ति, प्रागभाव की कारणता खण्डन में युक्ति, अभाव मात्र में कारणता
खण्डन में युक्ति, अभाव से भाव की उत्पत्ति के निषेध का आशय,
नित्यकर्म, नैमित्तिककर्म, विहितकर्म के न करने में प्रायश्चित्त,
चान्द्रायण, प्रायश्चित्त, शाण्डिल्य विद्या, उपासना के मनोमय
व्यापार मानने का आशय,
उपरतिशब्दार्थ, ६६
अज्ञान निवृत्ति, स्वरूपानन्द प्राप्ति, कण्ठचामीकरन्याय, ७८–८१
अज्ञान की भाव रूपता, ९६–१०३
अज्ञान का आश्रय, १०६
आवरणशक्ति, विक्षेपशक्ति, सत्तायें ११९–१२६
समष्टि, व्यष्टि, १५४
एकविवाह, आपात्काले द्वितीय विवाह, पति और पत्नी का कर्त्तव्य, २०९–२२४
पुत्र का स्थान, पुत्र के कर्त्तव्य, पुत्र के प्रकार, औरस, दैहिक, क्षेत्रज,
कानीन पुत्र गूढोत्पन्न, सहोढ़, अपनाए गये पुत्र, कृत्रिम, क्रीत पुत्रों
का निरूपण, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष,
तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा,
ध्यान, समाधि का निरूपण २५२–२६०

वेदान्तसारः

अखण्डं सच्चिदानन्दमवाङ्मनसगोचरम् ।
आत्मानमखिलाधारमाश्रयेऽभीष्टसिद्धये ॥ १ ॥

विद्वन्मनोरञ्जनी

श्रीरामतीर्थयतिविरचिता

ॐसकलब्रह्मविद्यासम्प्रदायप्रवर्तकाचार्येभ्यो नमः ।

सत्यं ज्ञानमनन्तं परिपूर्णानन्दविग्रहं रामम् ।
प्रत्यञ्चमनृतविश्वसृष्टिस्थित्यव्ययं वन्दे ॥१॥
वाणीकायमनोभिः श्रीगुरुविद्यागुरून्नमस्कृत्य ।
वेदान्तसारटीकां कुर्वे श्रद्धावशाद्यथाबुद्धि ॥२॥

चिकीर्षितस्य ग्रन्थस्याविघ्नपरिसमाप्तिप्रचयगमनशिष्टाचारपरिपालनफलं विशिष्टशिष्टाचारानुमितस्मृतिपरिकल्पितश्रुतिबोधितकर्तव्यताकं स्वाभिमत-देवतातत्त्वानुसन्धानात्मकं मङ्गलमाचरत्यखण्डेत्यादिश्लोकेन । आत्मानमाश्रय इत्यन्वयः । यद्यपि ग्रन्थकरणादिकार्यारम्भे गणेशसरस्वत्यादिदेवताभेदं

हिन्दी व्याख्या

अनुवाद—

(मैं सदानन्द) अभीष्ट की सिद्धि के लिये अखण्ड, सत्, चित्, आनन्द स्वरूप, वाणी और मन के अविषय, सम्पूर्ण जगत् के आधार आत्मा का आश्रय लेता हूं ।

व्याख्या—

प्रस्तुत पद्य में ग्रन्थकार ने अपने आप को आत्मा के आश्रयण का कर्त्ता बताया है पर प्रश्न यह होता है कि इस पद्य में कौन सा ऐसा शब्द है जिससे ग्रन्थकार का बोध होता है, इसका उत्तर यह है कि वह शब्द है 'आश्रये' पद से आक्षिप्त अहम् पद । आशय यह है कि 'आश्रये' यह उत्तम पुरुष का एकवचनान्त क्रिया पद है, क्रियापद कार्यपद में नियत रूप से साकाङ्क्ष होता है क्योंकि क्रिया कर्त्ता के बिना नहीं होती, अतः कर्त्ता को छोड़ कर क्रियापद से केवल क्रिया का बोध नहीं होता । उक्त क्रियापद यतः उत्तम पुरुष का एकवचनान्त है अतः उससे उत्तम पुरुष के एकवचनान्त 'अहम्' इस कर्तृपद का आक्षेप होता है, अहम् पद जहां उच्चरित होता है वहां उस पद से उसके स्वतन्त्र उच्चारण कर्ता का बोध होता है, जैसे यदि राम 'अहं गच्छामि' इस वाक्य का प्रयोग करता है तो इसमें 'अहं' पद से उसके उच्चारणकर्त्ता राम का बोध होता है